बौद्ध में पर्यावरण चिन्तन

डॉ0 अनिल कुमार सिंह

पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। यह उन शक्तियों, परिस्थितियों एवं वस्तुओं का योग है। जो मानव को परावृत्त करती है एवं उसके क्रियाकलापों को अनुशासित करती है एवं उसके क्रिया कलापों को अनुशासित करती है। पर्यावरण जैसा कि इसे स्तरीकृत रूप में प्रकृति ने बनाया है में जैविक विविधता विद्यमान है। पर्यावरण को संतुलित और विकासोन्मुख बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि उसमें पायी जाने वाली समस्त प्रजातियों को अपने सम्यक भूमि को निभाने का अवसर मिलता रहे। इस संरचना जाने–अनजाने में कोई परिवर्तन करना या किसी प्रजाति का विलुप्त होना इसका उपभोग करने वालों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। यही प्रतिकूल प्रभाव प्रदूषण है।

भारतीय परम्परा चाहें वैदिक हो या श्रमण सभी सूर्य, नदी, वन, भूमि, पशु–पक्षी सभी को प्रकृति का उपहार मानते हैं। इन सभी की मूल सोच एवं भारतीय जनमानस की भावना प्राकृतिक संसाधनों को श्रद्धेय एवं सम्माननीय मानने की है। आम बोल–चाल की भाषा में यही सत्कर्म या पुण्य बन गया और पर्यावरण का विनाश दुष्कर्म या पाप बन गया। महात्मा बुद्ध की सोच भी इससे अलग नहीं थी। उनका भी मानना था कि पर्यावरण के प्राकृतिक साधन जितने स्वच्छ एवं निर्मल होंगे। हमारे जीवन और मन उतने ही स्वस्थ एवं स्वच्छ होंगे।